अभ्यास

मौखिक प्रश्न

उत्तर दीजिए।

क. डाक बाबू का क्या नाम था? बाबू दयाराम

ख. बोर्ड की परीक्षा के लिए रजनी को कितने रुपये जमा करवाने थे? 300 रु०

ग. क्लास टीचर ने रजनी को क्यों डाँटा? फीस न देने के कारण

घ. रजनी ने बाबा फकीरचंद को किससे मिलवाया? डाक बाबू से

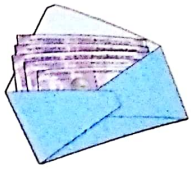

लिखित प्रश्न

1. **सही उत्तर पर ✓ लगाइए।**

क. रजनी किस गाँव की रहने वाली थी?

- [✓] ऊँचा गाँव
- [ ] नीचा गाँव
- [ ] धीरपुर गाँव

ख. रजनी ने फरिश्ता किसे कहा था?

- [ ] बाबा फकीरचंद को
- [✓] डाक बाबू को
- [ ] क्लास टीचर को

2. **हाँ या नहीं में उत्तर लिखिए।**

क. रजनी खूब मेहनत से पढ़ती थी। — हाँ

ख. रजनी ने डाक बाबू से रुपये माँगे। — नहीं

ग. रजनी के पिता अतिथि कक्ष में उसकी प्रतीक्षा कर रहे थे। — नहीं

घ. रजनी के पिता का ट्रैक्टर से एक्सीडेंट हो गया था। — हाँ

3. **गद्यांश को पढ़कर प्रश्नों के उत्तर दीजिए।**

धीरपुर था तो एक छोटा-सा कसबा, लेकिन उसमें लड़कियों का एक मशहूर स्कूल था—भगवतीबाई कन्या विद्यालय। उसमें दूर-दूर के गाँवों की लड़कियाँ भी पढ़ने आती थीं। उसी में पढ़ती थी ऊँचा गाँव की रजनी भी। वह भगवतीबाई कन्या विद्यालय के लड़कियों के हॉस्टल में रहती थी। उसके पिता देवीसिंह एक मामूली किसान थे। फिर भी उनकी इच्छा थी कि बेटी पढ़-लिख जाए, लायक बने। इसलिए, उन्होंने भगवतीबाई कन्या विद्यालय में उसे दाखिला दिलाया था।

क. भगवतीबाई कन्या विद्यालय कहाँ स्थित था?

भगवती कन्या विद्यालय धीरपुर नामक एक छोटे कस्बे में स्थित था।

Scanned with CamScanner

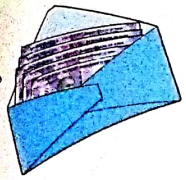

ख. रजनी धीरपुर में कहाँ रहती थी?

रजनी भगवती कन्या विद्यालय के लड़कियों के हॉस्टल में रहती थी।

ग. रजनी के पिता क्या काम करते थे?

रजनी के पिता का नाम देवीसिंह था।

घ. रजनी के पिता की क्या इच्छा थी?

उनकी इच्छा थी कि बेटी पढ़ लिखकर लायक बने।

4. उत्तर लिखिए।

क. प्रत्येक व्यक्ति दिल से डाक बाबू की इज़्ज़त क्यों करता था?

Page No – 11

ख. रजनी के पिता ने भगवतीबाई कन्या विद्यालय में रजनी को प्रवेश क्यों दिलाया था?

Page No – 11

ग. रजनी को कब परेशानी का सामना करना पड़ता था?

Page No – 12

घ. रजनी को डाक बाबू सचमुच के चाचा क्यों लगते थे?

Page No – 12

ङ. बाबा फकीरचंद ने रजनी को क्या बताया?

बाबा फकीरचंद ने रजनी को बताया कि- Page No – 14

5. उत्तर विस्तार से अभ्यासपुस्तिका में लिखिए।

क. पाठ के आधार पर डाक बाबू का चरित्र-चित्रण कीजिए।

ख. पाठ की किस घटना से पता चलता है कि डाक बाबू बड़े भले तथा दयालु इनसान थे?

ग. डाक बाबू का सुबह-सुबह रजनी के हॉस्टल आने का क्या कारण था?

6. सुनो और लिखो।

मनीऑर्डर चिंतित पोस्टकार्ड इम्तिहान रुआँसा मुश्किल प्रिंसिपल दस्तखत हालाँकि

Scanned with CamScanner

सोचो और बताओ

यदि समय रहते डाक बाबू रजनी की सहायता न करते, तो क्या होता?

यदि समय रहते डाकबाबू रजनी की सहायता न करते तो रजनी समय पर स्कूल की फ़ीस तथा परीक्षा की फ़ीस नहीं दे पाती और ऐसे में उसे परीक्षा से वंचित होना पड़ता।

भाषा बोध

1. पाठ में से आठ विदेशज शब्द ढूँढ़कर लिखिए।

मनीऑर्डर, दाखिला, हॉस्टल, पोस्टकार्ड, स्कूल, एक्सीडेंट, प्रिंसिपल, फ़ीस

विदेशज शब्द दूसरी भाषाओं से लिए गए शब्द होते हैं।

2. र के विभिन्न रूपों वाले दो-दो शब्द बनाइए।

क. र कुरता — परदा, सरदी

ख. र् पोस्टकार्ड — बोर्ड, आशीर्वाद

ग. ् विनम्रता — प्रसन्न, प्रकाश

घ. ् ट्रैक्टर — ट्रक, राष्ट्र

3. बॉक्स में दिए गए द्वित्व व्यंजनों तथा संयुक्ताक्षरों वाले शब्दों को ढूँढ़कर अलग-अलग लिखिए।

द्वित्व व्यंजन	संयुक्ताक्षर
खद्दर	चिट्ठी
सज्जन	शब्द
बच्चों	प्यार
छुट्टी	धन्यवाद
तरक्की	इम्तिहान

प्यार	शब्द
खद्दर	चिट्ठी
इम्तिहान	छुट्टी
सज्जन	धन्यवाद
बच्चों	तरक्की

Scanned with CamScanner

4. **वाक्य में प्रयुक्त विशेषण शब्दों को रेखांकित कीजिए और लिखिए।**

क. देवीसिंह एक मामूली किसान थे। — मामूली

ख. डाक बाबू एक खाली पोस्टकार्ड पकड़ा देते। — खाली

ग. आप मेरे लिए कुछ रुपयों का इंतज़ाम कर दीजिए। — कुछ

घ. डाक बाबू खद्दर की सफ़ेद धोती पहनते थे। — खद्दर

ङ. उन्होंने सौ-सौ के पाँच नोट उसके आगे रख दिए। — सौ-सौ

च. रजनी छोटे-से कसबे धीरपुर में पढ़ती थी। — छोटे-से

5. **दिए गए शब्दों के हिंदी पर्याय लिखिए।**

क. चिट्ठी — पत्र

ख. स्कूल — विद्यालय

ग. जवाब — उत्तर

घ. दस्तखत — हस्ताक्षर

ङ. फ़ीस — शुल्क

च. मदद — सहायता

6. **वचन बदलकर लिखिए।**

क. आँख — आँखें

ख. लड़की — लड़कियाँ

ग. बेटी — बेटियाँ

घ. परीक्षा — परीक्षाएँ

ङ. बच्चा — बच्चे

च. रुपया — रुपये

छ. मूँछ — मूँछें

ज. कुरता — कुरते

Scanned with CamScanner

स्मृति में सदा जीवित रहेंगे।

रजनी से अगर कोई पूछे कि उसे धीरपुर में सबसे अच्छा कौन लगता है, तो मुझे यकीन है, वह डाक बाबू का नाम ही लेगी। डाक बाबू दयाराम।

भला क्या खास बात थी उनमें? एकदम सीधे-सादे तो थे, उस छोटे-से कसबे धीरपुर के डाक बाबू दयाराम। जैसा नाम, वैसा ही भला और दयालु व्यक्तित्व भी।

लंबा-ऊँचा कद, बड़ी-बड़ी मूँछें। पर बात करो, तो लगेंगे एकदम विनम्रता की मूर्ति। हमेशा खद्दर की ही सफ़ेद धोती और कुरता पहनते थे। इसलिए, सबसे अलग नज़र आते थे। सारा धीरपुर उन्हें जानता था। कभी भी किसी का कोई काम अटकता, तो डाक बाबू दयाराम जैसे भी हो, उसे पूरा करते। कभी-कभी तो रात-बेरात भी वह दूसरों के लिए दौड़ पड़ते। इसलिए, हर कोई दिल से उनकी इज़्ज़त करता था।

धीरपुर था तो एक छोटा-सा कसबा, लेकिन उसमें लड़कियों का एक मशहूर स्कूल था—भगवतीबाई कन्या विद्यालय। उसमें दूर-दूर के गाँवों की लड़कियाँ भी पढ़ने आती थीं। उसी में पढ़ती थी ऊँचा गाँव की रजनी भी। वह भगवतीबाई कन्या विद्यालय के लड़कियों के हॉस्टल में रहती थी। उसके पिता देवीसिंह एक मामूली किसान थे। फिर भी उनकी इच्छा थी कि बेटी पढ़-लिख जाए, लायक बने। इसलिए, उन्होंने भगवतीबाई कन्या विद्यालय में उसे दाखिला दिलाया था। चाहे खुद कितनी भी तंगी में रहें, पर हर महीने मनीऑर्डर से उसकी फ़ीस के रुपये ज़रूर भेज देते थे।

रजनी अच्छी लड़की थी। खूब मेहनत से पढ़ती और अच्छे नंबर लाती। घर से थोड़े ही रुपये आते थे, पर वह उसमें अपना काम चला लेती थी। फ़िजूल की चीज़ों पर एक भी पैसा खर्च न करती।

Scanned with CamScanner

अन्य लड़कियाँ हैरान थीं, एक मामूली किसान की लड़की इतनी तरक्की कैसे कर रही है! रजनी को बस कभी-कभी परेशानी तब होती, जब घर से मनीऑर्डर आने में देर हो जाती। तब स्कूल में फ़ीस जमा कराने के लिए क्लास टीचर की डाँट पड़ती या फिर हॉस्टल की मेस का बिल चुकाने के तकाजे आने लगते। ऐसे में रजनी दौड़कर डाक बाबू दयारामजी के पास ही जाती। कहती,"चाचाजी! चाचाजी! मेरा मनीऑर्डर नहीं आया?"

डाक बाबू दयाराम रजनी का परेशान चेहरा देखकर उससे भी ज़्यादा परेशान हो जाते। फिर से पूरी लिस्ट मँगाकर देखते। फिर सिर हिलाकर कहते,"नहीं बेटी, अभी तो नहीं आया।"

रजनी उदास होकर लौटने लगती, तो एक क्षण के लिए वे गुमसुम-से उसे देखते रहते। फिर प्यार से आवाज़ लगाते,"रजनी बेटी, सुनो तो!"

रजनी आती, तो डाक बाबू चिंतित स्वर में पूछते,"क्यों बेटी, बहुत ज़रूरत है, तो मुझसे कहो। मैं कर देता हूँ इंतज़ाम। तुम्हारा मनीऑर्डर आए, तो लौटा देना।"

"नहीं चाचाजी, ऐसी तो कोई बात नहीं। मनीऑर्डर आता ही होगा।" कहकर रजनी फिर से लौटने लगती। तब डाक बाबू उसे एक खाली पोस्टकार्ड निकालकर पकड़ा देते। कहते,"जल्दी से इसपर पता लिखकर दो लाइन की चिट्ठी लिख दो अपने पिताजी के नाम। इसी डाक से निकल जाएगी। हो सकता है, कल-परसों तक मनीऑर्डर भी आ जाए।"

डाक बाबू का प्यार देखकर रजनी की आँखें भर आतीं। जल्दी से पोस्टकार्ड लिखकर डाक बाबू को पकड़ाती और हॉस्टल आ जाती। और फिर, सचमुच तीसरे-चौथे रोज़ उसका मनीऑर्डर आ जाता। रजनी डाक बाबू को धन्यवाद दिए बगैर न रह पाती। वे उसे अपने सचमुच के चाचा ही लगते थे।

ऐसे ही कई साल बीत गए। रजनी हाई स्कूल में आ गई। बोर्ड की परीक्षा थी। क्लास टीचर ने कहा था,"सभी बच्चों को बोर्ड की परीक्षा के लिए तीन सौ रुपये अलग से जमा कराने होंगे।" रजनी

Scanned with CamScanner

डाक बाबू उठकर चलने लगे, तो रजनी बोली,"चाचाजी, इस बार आपने मनीऑर्डर फॉर्म पर दस्तखत नहीं करवाए। मैं देखना चाहती थी, पिताजी ने मेरे नाम कोई संदेश तो नहीं भेजा।"

"ओ हाँ!" डाक बाबू बोले,"असल में डाकिए को आना था मनीऑर्डर देने, पर मैंने खुद दस्तखत कर दिए और उससे रुपये ले लिए, ताकि सुबह तेरे पास पहुँचा सकूँ। और हाँ, याद आया! तुम्हारे पिताजी का संदेश भी था उसमें कि हमेशा की तरह खूब लगन से पढ़ना और अव्वल आना।"

सुनकर रजनी की आँखों में चमक आ गई। उसने डाक बाबू को बहुत-बहुत धन्यवाद दिया।

अगले ही दिन रजनी ने घर पर चिट्ठी लिखी। उसने पिताजी को लिखा,"आपके भेजे हुए पाँच सौ रुपये मिल गए। डाक बाबू खुद हॉस्टल में चलकर आए और मुझे दे गए। बहुत भले हैं वे। उस दिन सुबह-सुबह रुपये न मिलते, तो मैं इम्तिहान में नहीं बैठ सकती थी।"

रजनी की चिट्ठी का कोई जवाब तो नहीं आया, पर इसके एक सप्ताह बाद गाँव से बाबा फकीरचंद आए। उन्हें उसके पिताजी ने ही भेजा था। बोले,"तेरे पिता का ट्रैक्टर से एक्सीडेंट हो गया था। काफ़ी चोट लगी थी, सब परेशान थे, तो रुपये कौन भेजता? ले, उन्होंने सात सौ रुपये भिजवाए हैं।"

"पर...?" रजनी हैरान होकर बोली,"पाँच सौ रुपये तो उन्होंने पिछले सप्ताह ही भिजवाए थे। फिर मैं इतने रुपये लेकर क्या करूँगी?"

"कौन-से पाँच सौ रुपये?" फकीरचंद हैरान होकर बोले,"तेरे पिता तो पिछले सप्ताह बेहोश थे। उन्हें कुछ होश ही नहीं था। फिर रुपये कौन भिजवाता?" थोड़ी देर बाद जैसे उन्हें याद आया हो, बोले,"हाँ, तूने एक चिट्ठी तो लिखी थी घर पर कि पाँच सौ रुपये मिल गए हैं। पर, किसी की कुछ समझ में नहीं आया था कि जब रुपये भेजे ही नहीं गए, तो तुझे मिले कैसे? कौन ऐसा फरिश्ता है जो..."

रजनी क्षण भर में सब समझ गई। बोली,"बाबा! चलिए, मैं आपको उस फरिश्ते से मिलवाती हूँ।"

Scanned with CamScanner

पाठ-2 डाक बाबू का प्यार

प्र० 5 (क) पाठ के आधार पर डाकबाबू का चरित्र चित्रण कीजिए।

उत्तर – पाठ के आधार पर डाकबाबू का चरित्र चित्रण निम्नलिखित है –

1 – डाकबाबू अपने नाम के अनुरूप ही दयालु स्वभाव के थे।

2 – डाकबाबू का स्वभाव बिल्कुल विनम्र था।

3 – वे दूसरों की सहायता के लिए हर सम्भव तैयार रहते थे।

Scanned with CamScanner

प्र० 5(ख) पाठ के किस घटना से पता चलता है कि डाकबाबू बड़े भले तथा दयालु इनसान थे?

उत्तर – जब रजनी के पिता के एक्सीडेंट के कारण उसका मनीऑर्डर आने में देर हुई और रजनी को स्कूल की फीस देना बहुत जरूरी था, अन्यथा वो परीक्षा से भी वंचित हो सकती थी। ऐसे समय पर डाकबाबू ने बिना कुछ बताए रजनी की सहायता की, इससे पता चलता है कि डाकबाबू बड़े भले तथा दयालु इनसान थे।

प्र० 5(ग) डाकबाबू का सुबह-सुबह रजनी के हॉस्टल आने का क्या कारण था?

उत्तर – रजनी का मनीऑर्डर अभी तक नहीं आया था और आज फीस भरने की आखिरी तारीख थी नहीं तो रजनी परीक्षा में शामिल नहीं हो पाती। यही सोचकर डाकबाबू सुबह-सुबह रजनी को पैसे देने हॉस्टल आये थे।

Scanned with CamScanner